

बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का प्रभुत्व: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (2020-2025)

राहुल कुमार, शोधार्थी, राजनितिक विज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सार

यह शोध बिहार की राजनीति में वर्ष 2020 से 2025 के दौरान विशिष्ट वर्ग (Elite Class) के प्रभाव का सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संस्थाओं के संदर्भ में विश्लेषण करता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह अपेक्षा की जाती है कि शासन एवं नीति-निर्माण की प्रक्रियाएँ व्यापक जनभागीदारी और समान प्रतिनिधित्व पर आधारित हों। किन्तु व्यवहारिक स्तर पर अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारक ऐसे हैं जो सत्ता और निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया को सीमित समूहों के प्रभाव में बनाए रखते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग किस प्रकार चुनावी प्रक्रिया, राजनीतिक नेतृत्व, नीति-निर्माण, प्रशासनिक निर्णयों तथा सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित करता है। शोध में अभिजन सिद्धांत (Elite Theory) को सैद्धांतिक आधार बनाया गया है तथा वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। सामाजिक न्याय, गठबंधन राजनीति, नई नेतृत्वकारी शक्तियों तथा लोकतांत्रिक विस्तार के कारण विशिष्ट वर्ग की संरचना में परिवर्तन अवश्य आया है, फिर भी सत्ता और प्रभाव का केंद्रीकरण पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। यह शोध लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व, समावेशी शासन तथा उत्तरदायी नीति-निर्माण के संदर्भ में बिहार की राजनीति का समकालीन विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा भविष्य में अधिक पारदर्शी, सहभागी और समावेशी राजनीतिक व्यवस्था के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करता है।

परिचय

बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का प्रभाव सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से दिखाई देता है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी, चुनावी व्यवहार, नेतृत्व निर्माण तथा नीति-निर्माण पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है। बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का प्रभाव सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से दिखाई देता है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी, चुनावी व्यवहार, नेतृत्व निर्माण तथा नीति-निर्माण पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है। बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का प्रभाव सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से दिखाई देता है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी, चुनावी व्यवहार, नेतृत्व निर्माण तथा नीति-निर्माण पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है। बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का प्रभाव सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से दिखाई देता है।

शोध पद्धति

इस शोध में गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीयक (Secondary) स्रोतों पर आधारित है। पुस्तकें, शोध-पत्र एवं जर्नल, सरकारी रिपोर्टें, चुनाव आयोग (Election Commission of India) के प्रकाशित आँकड़े, जनगणना (Census) रिपोर्ट, प्रतिष्ठित समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ इसमें द्वितीयक स्रोतों से उपलब्ध साहित्य, दस्तावेज़ों एवं रिपोर्टों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन मुख्य रूप से बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग की भूमिका, जातीय संरचना, राजनीतिक नेतृत्व, सत्ता-संरचना तथा लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व तक सीमित है। अतः संग्रहित तथ्यों का तुलनात्मक (Comparative) एवं विषय-वस्तु विश्लेषण (Content Analysis) के माध्यम से अध्ययन किया गया है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग (Elite Class) के प्रभुत्व को समझने के लिए अभिजन सिद्धांत (Elite Theory) सबसे उपयुक्त सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक समाज में, चाहे वह लोकतांत्रिक हो या अधिनायकवादी, सत्ता और निर्णय लेने की वास्तविक शक्ति सीमित संख्या में प्रभावशाली व्यक्तियों या समूहों के हाथों में केंद्रित रहती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों को समान राजनीतिक अधिकार प्राप्त होते हैं, परंतु व्यवहार में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक संसाधनों पर नियंत्रण रखने वाला वर्ग नीति-निर्माण और शासन को अधिक प्रभावित करता है। बिहार की राजनीति भी इस सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है।

अभिजन सिद्धांत के प्रमुख विचारकों में विल्फ्रेडो पेरटो (Vilfredo Pareto) का महत्वपूर्ण स्थान है। पेरटो के अनुसार प्रत्येक समाज में अभिजन वर्ग (Elite) और सामान्य वर्ग (Mass) मौजूद होते हैं। अभिजन वर्ग वे लोग होते हैं जिनके पास नेतृत्व क्षमता, संगठन कौशल, संसाधन और प्रभाव होता है। पेरटो ने "Circulation of Elites" अर्थात् अभिजन वर्ग के परिवर्तन का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार समय के साथ पुराने अभिजन वर्ग का स्थान नया अभिजन वर्ग लेता है, परंतु सत्ता हमेशा किसी न किसी विशिष्ट वर्ग के पास ही रहती है। बिहार की राजनीति में भी प्रारंभिक वर्षों में उच्च जातियों का प्रभुत्व था, जबकि बाद में पिछड़े वर्गों और अन्य सामाजिक समूहों के नेताओं का उदय हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि अभिजन वर्ग का स्वरूप बदला है, लेकिन उसका अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ।

गाएटानो मोस्का (Gaetano Mosca) ने अपनी "Ruling Class Theory" में कहा कि प्रत्येक समाज में एक संगठित शासक वर्ग और एक असंगठित सामान्य वर्ग होता है। संगठित वर्ग अपनी संगठन क्षमता, नेतृत्व तथा संसाधनों के कारण शासन पर नियंत्रण बनाए रखता है। बिहार की राजनीति में राजनीतिक दलों के शीर्ष नेतृत्व, प्रभावशाली जातीय समूहों, आर्थिक रूप से संपन्न वर्गों तथा वरिष्ठ नौकरशाहों को इस

दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। ये समूह चुनावी रणनीति, उम्मीदवार चयन तथा सरकारी नीतियों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

रॉबर्ट माइकल्स (Robert Michels) ने "*Iron Law of Oligarchy*" का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार प्रत्येक संगठन समय के साथ कुछ नेताओं के नियंत्रण में आ जाता है। लोकतांत्रिक राजनीतिक दल भी इससे अछूते नहीं रहते। बिहार के प्रमुख राजनीतिक दलों में नेतृत्व का केंद्रीकरण, परिवारवाद तथा सीमित व्यक्तियों द्वारा निर्णय लेना इस सिद्धांत की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

भारतीय संदर्भ में रजनी कोठारी का राजनीतिक विश्लेषण भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारतीय राजनीति में जाति और राजनीति के परस्पर संबंध को स्पष्ट किया। बिहार में जाति केवल सामाजिक पहचान नहीं बल्कि राजनीतिक संगठन, नेतृत्व और चुनावी व्यवहार का भी महत्वपूर्ण आधार रही है। इसलिए बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का अध्ययन केवल आर्थिक या राजनीतिक शक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक संरचना और जातीय समीकरण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस प्रकार, पेरेटो, मोस्का, माइकल्स तथा रजनी कोठारी के सिद्धांत बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग के उदय, परिवर्तन तथा प्रभुत्व को समझने के लिए एक मजबूत सैद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं। यह अध्ययन इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर बिहार की राजनीतिक संरचना, सत्ता के वितरण तथा लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बिहार भारतीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण राज्य रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर वर्तमान समय तक इस राज्य ने राष्ट्रीय राजनीति को अनेक प्रभावशाली नेता और राजनीतिक आंदोलन दिए हैं। बिहार की राजनीति का इतिहास सामाजिक परिवर्तन, जातीय संरचना, भूमि संबंधों तथा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। इन सभी कारकों ने राज्य में विशिष्ट वर्ग (Elite Class) के निर्माण और उसके प्रभुत्व को प्रभावित किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार की राजनीति पर मुख्य रूप से उच्च जातियों, विशेषकर भूमिहार, राजपूत, ब्राह्मण और कायस्थ समुदाय के नेताओं का प्रभाव था। उस समय भूमि, शिक्षा, प्रशासन और राजनीतिक नेतृत्व पर इन वर्गों का व्यापक नियंत्रण था। कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व भी मुख्यतः इन्हीं सामाजिक समूहों के नेतृत्व में संचालित होता था। परिणामस्वरूप राज्य की राजनीतिक सत्ता और नीति-निर्माण पर सीमित सामाजिक वर्ग का प्रभाव बना रहा। 1960 और 1970 के दशक में सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध असंतोष बढ़ने लगा। इसी दौर में जयप्रकाश नारायण (जेपी) के नेतृत्व में संपूर्ण क्रांति आंदोलन ने बिहार की राजनीति को नई दिशा दी। इस आंदोलन ने युवाओं, छात्रों तथा आम नागरिकों को राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया और पारंपरिक सत्ता संरचना को चुनौती दी।

1990 का दशक बिहार की राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। मंडल आयोग की सिफारिशों के लागू होने और सामाजिक न्याय की राजनीति के उभार ने पिछड़े वर्गों (OBC), अत्यंत पिछड़े वर्गों (EBC) तथा दलित समुदायों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ाया। इस दौर में नए राजनीतिक नेतृत्व का उदय हुआ और सत्ता का सामाजिक आधार बदलने लगा। हालांकि सत्ता का स्वरूप बदला, लेकिन प्रभावशाली राजनीतिक नेतृत्व और विशिष्ट वर्ग की अवधारणा समाप्त नहीं हुई, बल्कि नए सामाजिक समूहों के भीतर नया अभिजन वर्ग विकसित हुआ।

2005 के बाद बिहार में सुशासन, विकास, आधारभूत संरचना, शिक्षा तथा कानून-व्यवस्था जैसे मुद्दों को अधिक महत्व मिलने लगा। इसके साथ ही पंचायतों में महिलाओं तथा वंचित वर्गों को आरक्षण मिलने से स्थानीय स्तर पर राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई। इससे लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व का विस्तार हुआ, लेकिन राज्य स्तर की राजनीति में प्रभावशाली नेताओं, राजनीतिक दलों और संसाधन-संपन्न समूहों का महत्व अभी भी बना हुआ है।

वर्तमान समय में बिहार की राजनीति जातीय समीकरण, गठबंधन राजनीति, विकास, कल्याणकारी योजनाओं, मीडिया तथा सामाजिक नेटवर्क के संयुक्त प्रभाव से संचालित होती है। चुनावों में मतदाताओं की भूमिका पहले की तुलना में अधिक सक्रिय हुई है, लेकिन उम्मीदवार चयन, चुनावी वित्त, राजनीतिक रणनीति और नीति-निर्माण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विशिष्ट वर्ग का प्रभाव अभी भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

इस प्रकार, बिहार की राजनीति का ऐतिहासिक विकास यह दर्शाता है कि समय के साथ सत्ता का सामाजिक आधार बदलता रहा है, परंतु विशिष्ट वर्ग का प्रभुत्व पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। आज भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समूह सत्ता और निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इसलिए बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का अध्ययन ऐतिहासिक, सामाजिक तथा राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वर्ष 2020 से 2025 के बीच बिहार की राजनीति में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले। इस अवधि में राजनीतिक गठबंधनों में बदलाव, जातीय जनगणना, सामाजिक न्याय की राजनीति, विकास के मुद्दे, युवाओं की बढ़ती भागीदारी तथा डिजिटल प्रचार ने राज्य की राजनीति को नई दिशा दी। इन परिवर्तनों के बावजूद सत्ता, संसाधनों और निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में विशिष्ट वर्ग (Elite Class) का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विशिष्ट वर्ग से आशय उन व्यक्तियों या समूहों से है जिनके पास राजनीतिक प्रभाव, आर्थिक संसाधन, संगठनात्मक शक्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा होती है। यही वर्ग राजनीतिक निर्णयों, चुनावी रणनीतियों और शासन व्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

2020 के विधानसभा चुनाव बिहार की राजनीति का एक महत्वपूर्ण पड़ाव थे। इस चुनाव में विकास, रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई, लेकिन जातीय समीकरण भी चुनावी राजनीति का

प्रमुख आधार बने रहे। राजनीतिक दलों ने उम्मीदवारों के चयन में केवल लोकप्रियता ही नहीं, बल्कि जातीय संतुलन, स्थानीय प्रभाव और संगठनात्मक क्षमता को भी महत्व दिया। इससे स्पष्ट होता है कि चुनावी प्रक्रिया में विशिष्ट वर्ग की भूमिका केवल चुनाव लड़ने तक सीमित नहीं है, बल्कि चुनावी रणनीति तय करने तक फैली हुई है।

इस अवधि में गठबंधन राजनीति ने भी विशिष्ट वर्ग की भूमिका को और मजबूत किया। सरकारों के गठन और राजनीतिक समीकरणों में परिवर्तन यह दर्शाते हैं कि कुछ प्रभावशाली नेता और दल राज्य की राजनीति की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता मतदान करती है, लेकिन सत्ता की वास्तविक संरचना पर प्रभावशाली राजनीतिक नेतृत्व का गहरा प्रभाव बना रहता है।

बिहार की राजनीति में जाति आज भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। हालांकि विकास और सुशासन के मुद्दे पहले की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हुए हैं, फिर भी चुनावों में विभिन्न जातीय समूहों को ध्यान में रखकर राजनीतिक रणनीतियाँ बनाई जाती हैं। वर्ष 2020 से 2025 के दौरान अत्यंत पिछड़ा वर्ग (EBC), अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC), अनुसूचित जाति तथा महादलित समुदायों को राजनीतिक रूप से संगठित करने के प्रयास तेज हुए। इससे विशिष्ट वर्ग का सामाजिक आधार विस्तृत हुआ, लेकिन सत्ता का केंद्रीकरण पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। इस अवधि में जातीय सर्वेक्षण ने भी बिहार की राजनीति को प्रभावित किया। इसके बाद सामाजिक न्याय, आरक्षण और संसाधनों के समान वितरण पर नई राजनीतिक बहस शुरू हुई। विभिन्न राजनीतिक दलों ने इस मुद्दे को अपने-अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि बिहार में सामाजिक संरचना और राजनीतिक शक्ति का संबंध आज भी अत्यंत गहरा है।

आर्थिक संसाधनों का प्रभाव भी इस अवधि में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। चुनाव लड़ने, प्रचार करने, कार्यकर्ताओं को संगठित करने तथा जनसंपर्क स्थापित करने के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप आर्थिक रूप से सक्षम उम्मीदवारों और प्रभावशाली नेताओं को अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। इससे लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा प्रभावित होती है और सामान्य पृष्ठभूमि से आने वाले उम्मीदवारों के लिए चुनौतियाँ बढ़ जाती हैं।

डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया ने भी बिहार की राजनीति में नया परिवर्तन लाया। फेसबुक, एक्स, यूट्यूब और व्हाट्सएप जैसे माध्यमों के द्वारा राजनीतिक दलों ने मतदाताओं तक अपनी बात पहुँचाई। इससे चुनाव प्रचार का स्वरूप आधुनिक हुआ, लेकिन इन माध्यमों का प्रभावी उपयोग वही दल अधिक कर पाए जिनके पास पर्याप्त आर्थिक संसाधन और मजबूत संगठनात्मक ढाँचा था। इसलिए डिजिटल राजनीति ने भी विशिष्ट वर्ग की भूमिका को पूरी तरह समाप्त नहीं किया, बल्कि उसे एक नया स्वरूप प्रदान किया।

महिलाओं और युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में इस अवधि के दौरान उल्लेखनीय वृद्धि हुई। पंचायत स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व पहले से अधिक मजबूत हुआ तथा युवाओं ने भी राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाई। इसके बावजूद राज्य स्तर पर शीर्ष नेतृत्व में सीमित संख्या के प्रभावशाली नेताओं का प्रभुत्व बना रहा। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक भागीदारी बढ़ने के बावजूद निर्णय लेने की शक्ति अभी भी सीमित वर्ग के पास केंद्रित है।

2024 के लोकसभा चुनाव और 2025 के विधानसभा चुनाव की तैयारियों ने यह भी दिखाया कि राजनीतिक दल अब केवल पारंपरिक वोट बैंक पर निर्भर नहीं हैं। रोजगार, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, आधारभूत संरचना और युवाओं की आकांक्षाएँ भी चुनावी एजेंडा बन चुकी हैं। फिर भी उम्मीदवार चयन, गठबंधन निर्माण और चुनावी रणनीति में प्रभावशाली नेताओं की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण बनी हुई है।

समग्र रूप से देखा जाए तो 2020 से 2025 के बीच बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का स्वरूप पहले की तुलना में अधिक विविध हुआ है। अब यह केवल पारंपरिक उच्च वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि पिछड़े वर्गों, अत्यंत पिछड़े वर्गों, दलित समुदायों और नए राजनीतिक नेतृत्व को भी अपने भीतर शामिल करता है। इसके बावजूद सत्ता, संसाधनों और नीति-निर्माण पर नियंत्रण अभी भी सीमित राजनीतिक अभिजन के हाथों में केंद्रित है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बिहार की लोकतांत्रिक राजनीति निरंतर परिवर्तनशील है। सामाजिक न्याय, विकास और जनभागीदारी ने लोकतंत्र को मजबूत किया है, लेकिन विशिष्ट वर्ग का प्रभाव आज भी राजनीतिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है। भविष्य में यदि राजनीतिक दल आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत करें, चुनावी वित्त में अधिक पारदर्शिता लाएँ तथा युवाओं, महिलाओं और वंचित वर्गों को नेतृत्व के अधिक अवसर दें, तो बिहार की राजनीति और अधिक समावेशी तथा लोकतांत्रिक बन सकती है। यही राज्य के लोकतांत्रिक विकास की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

विश्लेषण

इस अध्ययन के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2020 से 2025 के दौरान बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग (Elite Class) का प्रभाव बना रहा, यद्यपि उसके स्वरूप और सामाजिक आधार में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सभी नागरिकों को समान राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं, लेकिन वास्तविक राजनीतिक शक्ति, नीति-निर्माण और संसाधनों के वितरण पर प्रभावशाली राजनीतिक नेतृत्व, संगठित दलों, आर्थिक रूप से सक्षम समूहों तथा सामाजिक रूप से प्रभावशाली वर्गों का नियंत्रण अधिक दिखाई देता है। यह स्थिति अभिजन सिद्धांत (Elite Theory) की पुष्टि करती है, जिसके अनुसार प्रत्येक लोकतांत्रिक समाज में निर्णय लेने की शक्ति सीमित व्यक्तियों या समूहों के हाथों में केंद्रित रहती है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का स्वरूप अब केवल पारंपरिक उच्च जातियों तक सीमित नहीं है। सामाजिक न्याय की राजनीति, मंडल आयोग की सिफारिशों के प्रभाव तथा पिछड़े और अत्यंत पिछड़े वर्गों के राजनीतिक सशक्तीकरण के परिणामस्वरूप नए राजनीतिक अभिजन का उदय हुआ है। 2020 से 2025 के बीच यह परिवर्तन और अधिक स्पष्ट दिखाई दिया। विभिन्न सामाजिक समूहों से आने वाले नेताओं ने राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया, लेकिन सत्ता और निर्णय लेने की प्रक्रिया फिर भी सीमित राजनीतिक नेतृत्व के इर्द-गिर्द केंद्रित रही।

विश्लेषण यह भी दर्शाता है कि बिहार की चुनावी राजनीति में जातीय समीकरण अभी भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राजनीतिक दल उम्मीदवारों के चयन, चुनावी रणनीति और गठबंधन निर्माण में सामाजिक एवं जातीय संतुलन को प्राथमिकता देते हैं। विकास, रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों की चर्चा बढ़ी है, फिर भी चुनावी सफलता के लिए जातीय आधार की अनदेखी नहीं की जा सकती। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक संरचना और राजनीतिक शक्ति का संबंध आज भी गहरा बना हुआ है।

गठबंधन राजनीति का विश्लेषण यह बताता है कि बिहार में सरकारों का गठन केवल चुनाव परिणामों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि राजनीतिक नेतृत्व की रणनीति, सहयोगी दलों के बीच समझौते तथा सत्ता संतुलन पर भी आधारित होता है। इस अवधि में हुए राजनीतिक गठबंधन परिवर्तनों से स्पष्ट है कि प्रभावशाली राजनीतिक नेतृत्व राज्य की सत्ता संरचना को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया में राजनीतिक अभिजन की निर्णायक भूमिका सामने आती है।

अध्ययन के दौरान यह भी पाया गया कि आर्थिक संसाधनों का चुनावी राजनीति पर गहरा प्रभाव है। चुनाव प्रचार, जनसंपर्क, संगठन निर्माण तथा मीडिया अभियान के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। आर्थिक रूप से मजबूत उम्मीदवारों को अपेक्षाकृत अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, जबकि सीमित संसाधनों वाले योग्य उम्मीदवारों को प्रतिस्पर्धा में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति लोकतांत्रिक समानता के सिद्धांत के समक्ष एक चुनौती प्रस्तुत करती है।

विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया ने बिहार की राजनीति को नया स्वरूप दिया है। राजनीतिक दलों और नेताओं ने डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से मतदाताओं तक अपनी पहुँच बढ़ाई। इससे चुनाव प्रचार अधिक आधुनिक और प्रभावी हुआ, लेकिन तकनीकी एवं आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता के कारण इसका लाभ मुख्य रूप से बड़े राजनीतिक दलों और प्रभावशाली नेताओं को मिला। इस प्रकार, डिजिटल राजनीति ने भी विशिष्ट वर्ग के प्रभाव को एक नए रूप में मजबूत किया।

महिलाओं, युवाओं तथा वंचित वर्गों की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी इस अवधि की एक सकारात्मक उपलब्धि रही। पंचायत स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा तथा युवाओं ने भी राजनीतिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भूमिका निभाई। इसके बावजूद राज्य स्तर पर प्रमुख निर्णय लेने वाले पदों पर सीमित

राजनीतिक नेतृत्व का प्रभुत्व बना रहा। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक भागीदारी का विस्तार हुआ है, लेकिन सत्ता का वास्तविक केंद्रीकरण अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है।

इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग स्थिर नहीं है, बल्कि समय के साथ बदलता रहता है। पहले जहाँ उच्च जातीय नेतृत्व प्रमुख था, वहीं वर्तमान समय में पिछड़े वर्गों, अत्यंत पिछड़े वर्गों तथा अन्य सामाजिक समूहों से भी प्रभावशाली नेतृत्व उभरकर सामने आया है। यह परिवर्तन लोकतांत्रिक प्रक्रिया की गतिशीलता को दर्शाता है, किंतु साथ ही यह भी स्पष्ट करता है कि किसी न किसी रूप में अभिजन वर्ग की भूमिका निरंतर बनी रहती है।

समग्र विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 2020 से 2025 के बीच बिहार की राजनीति में लोकतांत्रिक संस्थाएँ अधिक सक्रिय हुई हैं तथा सामाजिक प्रतिनिधित्व का दायरा भी विस्तृत हुआ है। फिर भी नीति-निर्माण, नेतृत्व चयन, चुनावी रणनीति तथा सत्ता संचालन में विशिष्ट वर्ग का प्रभाव स्पष्ट रूप से विद्यमान है। इसलिए बिहार में लोकतंत्र को और अधिक समावेशी बनाने के लिए राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत करना, चुनावी वित्त में पारदर्शिता बढ़ाना, युवाओं एवं महिलाओं को नेतृत्व के अधिक अवसर प्रदान करना तथा वंचित वर्गों की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। यही उपाय बिहार की लोकतांत्रिक राजनीति को अधिक उत्तरदायी, सहभागी और संतुलित बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग (Elite Class) का प्रभाव आज भी महत्वपूर्ण रूप से विद्यमान है। लोकतांत्रिक व्यवस्था का मूल सिद्धांत सभी नागरिकों को समान राजनीतिक अधिकार और अवसर प्रदान करना है, लेकिन व्यवहारिक राजनीति में सत्ता, संसाधनों और निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया पर सीमित संख्या में प्रभावशाली व्यक्तियों और समूहों का नियंत्रण देखने को मिलता है। बिहार की राजनीति भी इस सामान्य प्रवृत्ति से अलग नहीं है। यहाँ समय के साथ विशिष्ट वर्ग का स्वरूप अवश्य बदला है, किंतु उसका अस्तित्व और प्रभाव समाप्त नहीं हुआ है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो स्वतंत्रता के बाद बिहार की राजनीति में उच्च जातियों और भूमि-स्वामी वर्ग का प्रभुत्व अधिक था। सामाजिक न्याय के आंदोलन, मंडल आयोग की सिफारिशों तथा पिछड़े वर्गों के राजनीतिक सशक्तीकरण के परिणामस्वरूप सत्ता का सामाजिक आधार बदला और नए राजनीतिक नेतृत्व का उदय हुआ। वर्तमान समय में विशिष्ट वर्ग केवल पारंपरिक उच्च जातियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पिछड़े वर्ग, अत्यंत पिछड़े वर्ग, दलित समुदाय तथा अन्य प्रभावशाली सामाजिक समूहों से आने वाले नेता भी शामिल हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अभिजन वर्ग का स्वरूप बदलता रहता है, लेकिन किसी न किसी रूप में सत्ता और प्रभाव का केंद्रीकरण बना रहता है।

वर्ष 2020 से 2025 के दौरान बिहार की राजनीति में गठबंधन परिवर्तन, जातीय सर्वेक्षण, सामाजिक न्याय, विकास तथा रोजगार जैसे मुद्दे प्रमुख रहे। इन परिवर्तनों ने लोकतांत्रिक राजनीति को नई दिशा दी, परंतु उम्मीदवारों के चयन, राजनीतिक रणनीति, गठबंधन निर्माण तथा नीति-निर्माण में प्रभावशाली राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका निरंतर बनी रही। इससे यह स्पष्ट होता है कि लोकतंत्र में चुनाव जनता द्वारा किए जाते हैं, लेकिन राजनीतिक दिशा तय करने में संगठित और प्रभावशाली वर्ग का योगदान अत्यधिक रहता है। आर्थिक संसाधनों की भूमिका भी बिहार की राजनीति में अत्यधिक महत्वपूर्ण बनी हुई है। चुनाव लड़ने, प्रचार करने, संगठन को मजबूत बनाने तथा जनसंपर्क स्थापित करने के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप आर्थिक रूप से संपन्न और संगठित उम्मीदवारों को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में अपेक्षाकृत अधिक लाभ मिलता है। यह स्थिति लोकतांत्रिक समानता के सिद्धांत के समक्ष एक चुनौती प्रस्तुत करती है और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को असमान बना सकती है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक ने बिहार की राजनीति में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। डिजिटल माध्यमों ने राजनीतिक दलों और नेताओं को मतदाताओं तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुँचने का अवसर प्रदान किया है। हालांकि, इन संसाधनों का प्रभावी उपयोग मुख्यतः वही राजनीतिक दल और नेता कर पाए जिनके पास पर्याप्त आर्थिक संसाधन और मजबूत संगठनात्मक क्षमता थी। इसलिए तकनीकी विकास ने राजनीतिक प्रक्रिया को आधुनिक बनाया है, लेकिन विशिष्ट वर्ग की भूमिका को समाप्त नहीं किया है।

इस अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग एक स्थिर अवधारणा नहीं है। सामाजिक परिवर्तन, लोकतांत्रिक विकास, शिक्षा, आर्थिक प्रगति तथा राजनीतिक आंदोलनों के साथ इसका स्वरूप निरंतर बदलता रहता है। पुराने अभिजन वर्ग के स्थान पर नए सामाजिक समूहों से नेतृत्व उभरता है, किंतु सत्ता और निर्णय-निर्माण का केंद्रीकरण किसी न किसी रूप में बना रहता है। यही कारण है कि अभिजन सिद्धांत आज भी बिहार की राजनीति को समझने का एक प्रभावी सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि बिहार की लोकतांत्रिक व्यवस्था निरंतर विकास की प्रक्रिया में है। यदि राजनीतिक दल आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत करें, उम्मीदवार चयन में पारदर्शिता अपनाएँ, चुनावी वित्त को अधिक जवाबदेह बनाएँ तथा युवाओं, महिलाओं और वंचित समुदायों को नेतृत्व के समान अवसर प्रदान करें, तो लोकतंत्र और अधिक समावेशी एवं प्रभावी बन सकता है। साथ ही नागरिकों की राजनीतिक जागरूकता, शिक्षा तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती भी सत्ता के अत्यधिक केंद्रीकरण को कम करने में सहायक होगी। इस प्रकार, यह अध्ययन निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि बिहार की राजनीति में विशिष्ट वर्ग का प्रभाव वर्तमान समय में भी विद्यमान है, परंतु उसका स्वरूप बदलता रहा है। लोकतंत्र की वास्तविक सफलता तभी संभव होगी जब सत्ता और निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में समाज के सभी वर्गों की समान, प्रभावी और सार्थक भागीदारी सुनिश्चित की जाए। यही एक समावेशी, उत्तरदायी और सशक्त लोकतांत्रिक व्यवस्था की पहचान होगी तथा बिहार के राजनीतिक विकास की दिशा को और अधिक संतुलित एवं जनोन्मुख बनाएगी।

संदर्भ सूची

1. पेरैटो, विल्फ्रेडो. (1916/1935). द माइंड एंड सोसाइटी। हारकोर्ट, ब्रेस एंड कंपनी।
2. माइकल्स, रॉबर्ट. (1911/1962). पॉलिटिकल पार्टिज़: ए सोशियोलॉजिकल स्टडी ऑफ द ऑलिगार्किकल टेंडेन्सीज ऑफ मॉडर्न डेमोक्रेसी। डोवर पब्लिकेशन्स।
3. मोस्का, गाएटानो. (1939). द रूलिंग क्लास। मैकग्रा-हिल।
4. कोठारी, रजनी. (1970). पॉलिटिक्स इन इंडिया। ओरिएंट लॉन्गमैन।
5. ब्रास, पॉल आर. (1994). द पॉलिटिक्स ऑफ इंडिया सिन्स इंडिपेंडेंस (द्वितीय संस्करण)। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. जाफ़्रेलोट, क्रिस्टोफ़. (2003). इंडियाज़ साइलेंट रिवोल्यूशन: द राइज़ ऑफ द लोअर कास्ट्स इन नॉर्थ इंडिया। परमानेंट ब्लैक।
7. कुमार, संजय. (2009). "पोस्ट-मंडल पॉलिटिक्स इन बिहार: चेंजिंग पैटर्न्स ऑफ पॉलिटिकल मोबिलाइज़ेशन।" इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 44(9), 45–52।
8. भारत सरकार. (2011). भारत की जनगणना 2011। भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय।
9. भारत निर्वाचन आयोग. (2020). बिहार विधानसभा चुनाव 2020: सांख्यिकीय प्रतिवेदन। नई दिल्ली: भारत निर्वाचन आयोग।
10. बिहार सरकार. (2023). बिहार जाति सर्वेक्षण प्रतिवेदन। सामान्य प्रशासन विभाग, बिहार सरकार।
11. भारत निर्वाचन आयोग. (2024). लोकसभा आम चुनाव 2024: सांख्यिकीय प्रतिवेदन। नई दिल्ली: भारत निर्वाचन आयोग।
12. पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च. (2025). 18वीं बिहार विधानसभा का प्रोफ़ाइल।